रूसी कवि येव्गोनी येव्तुशेंको की कविता

(1)

समझौतावादी समझौता दास
समझौतावादी समझौता दास
मेरे भीतर फुसफुसाता है
"अमाँ यार! ज़्यादा मिज़ाज दिखाने की जरूरत नहीं है
बस जरा सा पाला बदल लो"

समझौतावादी समझौता दास
कोई कट्टर जल्लाद नहीं है
दोस्त के रूप में
उसे आला दर्जे के ख्याल आते हैं
वह हमें ऊँचे मकाम की तरफ बढ़ाता है
वह हमें शराब पीने के लिए उकसाता है (संयमित रूप में)
उकसाता है थोड़ी सी लंपटता के लिए भी
गुनहगारों का भी कुछ मोल होता है
थोड़ा सा गुनाह आदमी को
थोड़ा सा बुजदिल बनाता है

अबेकस पर
इन सबकी गिनती करते हुए
समझौतावादी,
रोजगार देनेवाला
हमें गुपचुप खरीदता है
मानो हम बच्चों की तरह नखरैल बड़े हों
हमें वह खरीदता है
फ्लैट देकर
थोड़ा सा फर्नीचर देकर
शानदार कपड़े-लत्ते देकर
फिर हमारा रोबीला लहरा नीचे गिर जाता है
अगरचे हम बेतरह ऊधम जोतते हैं
जब धुत होते हैं

ध्यान से सुनिए
गोदरेज फ्रिज में कुछ टिक-टिक सुनायी देती है
गुलाबी गालों वाले समझौतावादी ने
बस अभी-अभी अपने सफेद दांत सामन मछली में गढ़ाये हैं
ठिगने जैसा क़द
वह आवारागर्द समझौतावादी
कई दफा टी.वी.से अपनी जीभ बाहर निकालकर
हमें ललचाता है
मारुति सुजुकी की कार अभी हाल में खरीदी गयी है

और वहां वह धूर्त कमबख्त समझौतावादी !
छोटी गुड़िया की तरह आजाद
एक धागे से लटका झूला झूल रहा है

समझौतावादी समझौता दास
एक उम्दा लेखक है
वह है
बचत बहियों का
हृदय विदारक रचनाकार

हमारा दोस्त
समझौतावादी समझौता दास
अपने फर्जों तले दबा हुआ है
बस वह एक मुलायम और विनम्र चूहा है
जो थोड़ा-थोड़ा कुतर कर हमें खा जाता है

नोट : चरित्र का नाम, फ्रिज और कार के रूसी ब्रांड़ो के नामों को भारत में प्रचलित नामों के अनुसार प्रयोग किया गया है.

(2)

चेहरे के पीछे छिपा चेहरा
कहाँ रहता है
चेहरे के पीछे छिपा चेहरा
हर एक को खुद के चेहरे के बारे में
सब कुछ जानना ही चाहिए

लोगों को अक्सर अपने खुद के बारे में
जरा सा भी अता-पता भी नहीं होता
हममें से हर कोई खुद को बचाने के लिए
आला वकील बन जाता है

नीरो जाहिरा तौर पर सोचता था
कि वह एक कवि है
हिटलर सोचता था कि वह इस दुनिया को
दुखों से निजात दिला देगा

एक कमीना सोचता है-मैं बेहद फराकदिल हूँ
एक छिछला आदमी समझता है-मैं गहरा हूँ"
कई दफा ईश्वर ठंडी आह भर कर कहेगा-मैं एक कीड़ा हूँ"
कीड़ा फुफकार कर कहता है-मैं ईश्वर हूँ"

कीड़े घमंड के साथ ऊपर चढ़ते हैं
बुजदिल बादलों में खुश रहते हैं
सिर्फ एक आजाद आदमी
सोचता है :
"मैं गुलाम हूँ"

अंग्रेजी से अनुवाद - विनोद दास

हुजूर पुलिस वाले रस्सी का साँप कैसे बना देते हैं

एक बार एक दरोगा जी का मुंह लगा नाई पूछ बैठा - "हुजूर पुलिस वाले रस्सी का साँप कैसे बना देते हैं ?"

दरोगा जी बात को टाल गए।

लेकिन नाई ने जब दो-तीन बार यही सवाल पूछा तो दरोगा जी ने मन ही मन तय किया कि इस भूतनी वाले को बताना ही पड़ेगा कि रस्सी का साँप कैसे बनाते हैं !

लेकिन प्रत्यक्ष में नाई से बोले - "अगली बार आऊंगा तब बताऊंगा !"

इधर दरोगा जी के जाने के दो घंटे बाद ही 4 सिपाही नाई की दुकान पर छापा मारने आ धमके - "मुखबिर से पक्की खबर मिली है, तू हथियार सप्लाई करता है। तलाशी लेनी है दूकान की!"

तलाशी शुरू हुई ...

एक सिपाही ने नजर बचाकर हड़प्पा की खुदाई से निकला जंग लगा हुआ असलहा छुपा दिया !

दूकान का सामान उलटने-पलटने के बाद एक सिपाही चिल्लाया - "ये रहा रिवाल्वर"

छापामारी अभियान की सफलता देख के नाई के होश उड़ गए- "अरे साहब मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता ।

आपके बड़े साहब भी मुझे अच्छी तरह पहचानते हैं !"

एक सिपाही हड़काते हुए बोला - "दरोगा जी का नाम लेकर बचना चाहता है ? साले सब कुछ बता दे कि तेरे गैंग में कौन-कौन है ... तेरा सरदार कौन है ... तूने कहाँ-कहाँ हथियार सप्लाई किये ... कितनी जगह लूट-पाट की ... तू अभी थाने चल !"

थाने में दरोगा साहेब को देखते ही नाई पैरों में गिर पड़ा- "साहब बचा लो ... मैंने कुछ नहीं किया!"

दरोगा ने नाई की तरफ देखा और फिर सिपाहियों से पूछा - "क्या हुआ ?"

सिपाही ने वही जंग लगा असलहा दरोगा के सामने पेश कर दिया - "सर जी मुखबिर से पता चला था .. इसका गैंग है और हथियार सप्लाई करता है.. इसकी दूकान से ही ये रिवाल्वर मिली है !"

दरोगा सिपाही से - "तुम जाओ मैं पूछ-ताछ करता हूँ !"

सिपाही के जाते ही दरोगा हमदर्दी से बोले - "ये क्या किया तूने?"

नाई घिघियाया - "सरकार मुझे बचा लो...!"

दरोगा गंभीरता से बोला - "देख ये जो सिपाही हैं न ...साले एक नंबर के कमीने हैं ...मैंने अगर तुझे छोड़ दिया तो ये साले मेरी शिकायत ऊपर अफसर से कर देंगे ... इन कमीनो के मुंह में हड्डी डालनी ही पड़ेगी ...

मैं तुझे अपनी गारंटी पर दो घंटे का समय देता हूँ , जाकर किसी तरह बीस हजार का इंतजाम कर ..

पांच - पांच हजार चारों सिपाहियों को दे दूंगा तो साले मान जायेंगे !"

नाई रोता हुआ बोला - "हुजूर मैं गरीब आदमी बीस हजार कहाँ से लाऊंगा?"

दरोगा डांटते हुए बोला - "तू मेरा अपना है इसलिए इतना सब कर रहा हूँ तेरी जगह कोई और होता तो तू अब तक जेल पहुँच गया होता ...जल्दी कर वरना बाद में मैं कोई मदद नहीं कर पाऊंगा !"

नाई रोता - कलपता घर गया ... अम्मा के कुछ चांदी के जेवर थे ...चौक में एक ज्वैलर्स के यहाँ सारे जेवर बेचकर किसी तरह बीस हजार लेकर थाने में पहुंचा और सहमते हुए बीस हजार रुपये दरोगा जी को थमा दिए ! दरोजा जी ने रुपयों को संभालते हुए पूछा - "कहाँ से लाया ये रुपया?"

नाई ने ज्वैलर्स के यहाँ जेवर बेचने की बात बतायी तो दरोगा जी ने सिपाही से कहा - "जीप निकाल और नाई को हथकड़ी लगा के जीप में बैठा ले .. दबिश पे चलना है !"

पुलिस की जीप चौक में उसी ज्वैलर्स के यहाँ रुकी !

दरोगा और दो सिपाही ज्वैलर्स की दूकान के अन्दर पहुंचे ...

दरोगा ने पहुँचते ही ज्वैलर्स को रुआब में ले लिया - "चोरी का माल खरीदने का धंधा कब से कर रहे हो?"

ज्वैलर्स सिटपिटाया - "नहीं दरोगा जी आपको किसी ने गलत जानकारी दी है!"

दरोगा ने डपटते हुए कहा - "चुप 999 बाहर देख जीप में हथकड़ी लगाए शातिर चोर बैठा है ... कई साल से पुलिस को इसकी तलाश थी ... इसने तेरे यहाँ जेवर बेचा है कि नहीं ? तू तो जेल जाएगा ही .. साथ ही दूकान का सारा माल भी जब्त होगा !"

ज्वैलर्स ने जैसे ही बाहर पुलिस जीप में हथकड़ी पहले नाई को देखा तो उसके होश उड़ गए, तुरंत हाथ जोड़ लिए - "दरोगा जी जरा मेरी बात सुन लीजिये!

कोने में ले जाकर मामला एक लाख में सेटल हुआ !

दरोगा ने एक लाख की गड्डी जेब में डाली और नाई ने जो गहने बेचे थे वो हासिल किये फिर ज्वैलर्स को वार्निंग दी- "तुम शरीफ आदमी हो और तुम्हारे खिलाफ पहला मामला था इसलिए छोड़ रहा हूँ... आगे कोई शिकायत न मिले !"

इतना कहकर दरोगा जी और सिपाही जीप पर बैठ के रवाना हो गए !

थाने में दरोगा जी मुस्कुराते हुए पूछ रहे थे - "साले तेरे को समझ में आया रस्सी का सांप कैसे बनाते हैं !"

नाई सिर नवाते हुए बोला - "हाँ माई-बाप समझ गया !"

दरोगा हँसते हुए बोला - "भूतनी के ले संभाल अपनी अम्मा के गहने और एक हजार रुपया और जाते-जाते याद कर ले ... हम रस्सी का सांप ही नहीं बल्कि नेवला .. अजगर ... मगरमच्छ सब बनाते हैं .. बस असामी बढ़िया होना चाहिए"।

.....हमारे देश का कटु सत्य

-शिव कुमार झा

लघु कथा / छोटी मछलियां और शार्क

मकान मालकिन की छोटी लड़की ने महाशय क से पूछा-

अगर शार्क आदमी होते तो क्या छोटी मछलियों के साथ उनका व्यवहार सभ्य-शालीन होता?

उन्होंने कहा- निश्चय ही, अगर शार्क आदमी होते तो वे छोटी मछलियों के लिए समुद्र में विशाल बक्से बनवाते, जिसके भीतर हर तरह के भोजन होते, तरकारी और मांस दोनों ही।

वे इस बात का ध्यान रखते कि बक्सों में साफ पानी रहे और आम तौर पर वे हर तरह की स्वच्छता का इंतजाम करते।

उदाहरण के लिए अगर किसी छोटी मछली का पंख चोटिल हो जाता तो तुरन्त उसकी पट्टी की जाती, ताकि वह मर न जाये और समय से पहले वह शार्क के लिए गायब न हो जाये।

छोटी मछलियाँ उदास न हों इसलिए समय-समय पर विराट जल महोत्सव होता, क्योंकि प्रसन्नचित्त मछलियाँ उदास मछलियों से ज्यादा स्वादिष्ट होती हैं।

निश्चय ही, बड़ा बक्सों में स्कूल भी होते। उन स्कूलों में छोटी मछलियाँ यह सीखतीं कि शार्क के जबड़ों में कैसे तैरा जाता है।

भूगोल जानना भी जरूरी होता, ताकि उदहारण के लिए, वे उन बड़े शार्कों को खोज सकें जो किसी जगह सुस्त पड़े हों।

छोटी मछलियों के लिए प्रमुख विषय निश्चय ही नैतिक शिक्षा होता।

उनको सिखाया जाता की दुनिया में यह सबसे अच्छी और बेहद सुन्दर बात होगी अगर कोई छोटी मछली खुशी-खुशी अपने को कुर्बान करे और यह कि उन सबको शार्कों पर भरोसा रखना होगा, खासकर तब जब वे कहें कि वे उनके लिए सुन्दर भविष्य मुहैया कर रहे हैं।

छोटी मछलियों को पढ़ाया जाता कि यह भविष्य तभी सुनिश्चित होगा जब वे आज्ञाकारी बनना सीख जायें।

छोटी मछलियों को सभी घटिया, भौतिकवादी, स्वार्थपरक और मार्क्सवादी रुझानों से सावधान रहना होता और अगर उनमें से कोई दगाबाजी करके इन बातों में दिलचस्पी लेती तो तुरन्त इसकी सूचना शार्कों को देनी होती।

अगर शार्क आदमी होते तो निश्चय ही वे एक दूसरे के खिलाफ युद्ध छेड़ते, ताकि दूसरे मछली बक्सों और दूसरी छोटी मछलियों को जीत सकें।

युद्ध उनकी अपनी छोटी मछलियों द्वारा लड़ा जाता। वे अपनी छोटी मछलियों को सिखाते कि उनमें और दूसरे शार्कों की छोटी मछलियों के बीच भरी अन्तर है।

वे घोषणा करते कि छोटी मछली चुप रहने के लिए सुविख्यात हैं, लेकिन वे बिलकुल अलग भाषाओं में चुप हैं और इसलिए एक दूसरे को समझ पाना उनके लिए असंभव होता है।

हर छोटी मछली जो युद्ध में एक जोड़ी छोटी मछली, यानी अपने दुश्मन की हत्या करती उसे समुद्री शैवाल टाँका हुआ तमगा मिलता और उसको नायक की उपाधि से विभूषित किया जाता।

अगर शार्क आदमी होते तो निश्चय ही कला भी होती।

सुन्दर-सुन्दर तस्वीरें होतीं जिनमें शार्क की दाँतों को शानदार रंगों में चित्रित किया गया होता और उनके जबड़ों को निर्मल विहार उपवन के रूप में दर्शाया जाता जिसमें कोई भी शान से विचरण कर पाता।

समुद्र की तलहटी में थियेटर यह दिखाता कि कैसे बहादुर छोटी मछलियाँ उत्साहपूर्वक शार्क के जबड़े में तैर रही हैं और संगीत इतना सुन्दर होता कि वह उनके सुर में सुर मिलाता रहता, आर्केस्ट्रा उनको प्रोत्साहित करता और अत्यंत मनोहर विचारों से श्लथ, छोटी मछलियाँ स्वप्निल बहाव के साथ शार्क के जबड़े में समातीं।

एक धर्म भी होता अगर शार्क आदमी होते।

वह उपदेश देता कि छोटी मछली वास्तव में केवल शार्कों के उदर में ही समुचित रूप से जीना शुरू करती हैं।

इसके आलावा, अगर शार्क आदमी होते तो सभी छोटी मछलियों की बराबरी का दर्जा खत्म हो जाता, जैसा कि आजकल है।

कुछ को महत्वपूर्ण पद दिये जाते और उनको बाकी सब से ऊँचा स्थान दिया जाता। जो थोड़ी बड़ी होतीं उन्हें अपने से छोटी मछलियों को खाने की भी इजाजत होती।

शार्कों की इस बात पर पूरी सहमति होती क्योंकि उनको भी तो समय-समय पर थोडा बड़ा निवाला खाने को मिलता।

और हाँ, जो छोटी मछलियाँ थोड़े बड़े आकार की होतीं वे अपने पदों पर काबिज होकर बाकी छोटी मछलियों के बीच व्यवस्था कायम करतीं।

वे शिक्षक, अफसर, बक्सा निर्माण इंजीनियर इत्यादि हो जातीं।

थोड़े शब्दों में, अगर शार्क आदमी होते तो पहली बार वे समुद्र के भीतर संस्कृति ले आते।

[बर्तोल्त ब्रेख्त, अनुवाद—दिगंबर]